शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2014

कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों में नारी

*डॉ. गीता कपिल
**शशी बाला
*एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
वनस्थली विद्यापीठ
**शोधार्थी, हिन्दी विभाग
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

उपन्यास में मानव जीवन का सच्चा चित्र प्रस्तुत करने की क्षमता होती है। उपन्यास केवल कलात्मक रचना ही नहीं है और न ही जीवन अनुभवों का कोरा वृत्तान्त ही है। वह समग्र रचना है जिसमें मानवीय संघर्ष और आकांक्षाएं दीप्तिमान हो उठती हैं। महिला उपन्यासकारों में कृष्णा अग्निहोत्री एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। उनके लेखन के केंद्र में नारी है। प्रस्तुत शोध पत्र में उनके उपन्यासों में चित्रित नारी के विविध रूपों की चर्चा की गयी है।

प्रस्तावना

कृष्णा अग्निहोत्री आधुनिक युग की ऐसी सशक्त लेखिका हैं जिनके लेखन का केन्द्र-बिन्दु नारी है। उन्होंने अपने जीवन में जो देखा, भोग वह बेबाक अपने नारी पात्रों के माध्यम से साहित्य में उतार दिया। इस अर्थ में उनके उपन्यासों को आत्मकथात्मक उपन्यास भी कहा जा सकता है। 'बात एक औरत की' शीर्षक उपन्यास उनके जीवन के सर्वाधिक निकट है। इसमें उन्होंने अपने जीवन की अधिकांश घटनाओं को प्रस्तुत किया है। जीवन में कदम-कदम पर अनेक विकट परिस्थितियाँ एवं बाधाएं आईं किन्तु उन्होंने जीवन में कभी हार नहीं मानी और उनका सामना करते हुए प्रत्येक क्षण अपने लक्ष्य में संलग्न रही। उन्होंने अपने जीवन संघर्ष को उपनासों के माध्यम में अभिव्यक्ति प्रदान की है। इसलिए उनका कथ्य इतना सजीव बन पड़ा है।

उपन्यासों में नारी

इनके उपन्यासों में नारी माँ, बहन, बेटी, सास, ननद, मौसी आदि विविध रूपों में दिखाई देती है। जिनकी अपनी-अपनी समस्याएं हैं। 'टेसू की टहनियाँ' में सीता की कुंवारी माँ की झलक दिखाई देती है। बहन और मौसेरी बहन एक ही वातावरण में पलकर भी एक-दूसरे से कितनी अलग हैं। इसका भी यथार्थ चित्रण रीमा के चरित्र के माध्यम से लेखिका ने किया है। कहीं-कहीं मामी, नानी, जेठानी, देवरानी के छुटपुट वर्णन इनके उपन्यासों में दिखते हैं। बेटियों में उम्मी, गुड्डी, अंशु, निम्मों की पीढ़ी के माध्यम से आधुनिक सभ्यता का पता चलता है। लेखिका ने प्रेमिकाओं के विभिन्न रूप अपने ढंग से प्रस्तुत किए हैं। कामकाजी नारी कहानियों की तुलना में उपन्यासों में अधिक दिखाई देती है। नारी-पुरूष के संबंधों पर तो उनके अधिकांश उपन्यासों की नींव है। पति द्वारा पत्नी का शारीरिक एवं मानसिक शोषण अधिकांश उपन्यासों की समस्या

है। 'बात एक औरत की' उपन्यास में कनु के पिता उसकी माँ के होते हुए किसी अन्य औरत सीमा से संबंध बनाये रखते हैं। घर के लोग सब कुछ जानते हुए भी कुछ नहीं कर सकते। कनु जब उनके संबंधों में अड़चन पैदा करने लगती है तब सीमा उसका विवाह करने पर जोर डालने लगती है। तब कनु के मन में सवाल उठता है कि- ''न यह स्त्री सुन्दर है, न योग्य, न विदुषी, न यह उनकी रिश्तेदार, न ही पिताजी की पत्नी, तब उसे क्यों देखे बिना पिताजी का मन ही नहीं मानता ? ऐसे ही बिना देखे पिताजी माँ के बिना क्यों रह जाते हैं ? क्या होता है किसी और विशेष में, जो पुरूष को इस तरह बांध लेता है।''1 उपन्यास में लेखिका ने पुरूष के पुरूषत्व को इतना महान दिखाने का प्रयास किया है कि पत्नी के होते हुए तथा दो जवान बेटियों के सामने पिता की अनैतिकता सभी हदों को पार करके रिश्तों में लाज, शर्म नैतिक-अनैतिक का भेद समाप्त कर देता है। जो आज भी समाज में प्रायः देखने को मिलती है।

कृष्णा अग्निहोत्री ने अपने अधिकांश उपन्यासों में युवतियों को आर्थिक विवशता से जुझते हुए दिखाया है। शिक्षित युवतियां इस समस्या का समाधान कामकाज के द्वारा करती हैं। वहीं अशिक्षित युवतियां घरेलू कार्य करके अपना जीवन यापन करती दिखाई देती हैं। कुछ युवतियों को मजबूरी में अनैतिक कार्यों को भी चुनना पड़ता है जो उनके पूरे जीवन को बर्बाद कर देता है। 'टपरेवाले' की पचिया को माँ की बीमारी के कारण घर का राशन-पानी जुटाने के लिए दुकान वाले बूढ़े से अवैध संबंध बनाने पड़ते हैं। जब भी घर में राशन खत्म होता है राशन के बदले में बूढ़ा उसका बलात्कार करता है। ''बेटी की उम्र की लड़की का शील भंग करके उसे संतोष और दया उभर आयी और वह पचिया को गोद में बैठाकर उसे दुलारता रहा।''2 गरीबों की बस्ती में अनेकों पचिया जैसी युवतियां हैं जो अपने परिवार का पेट भरने के लिए अपना शील दांव पर लगा देती हैं। समाज न ही तो इनका उद्धार कर सकता है और न ही ठीक से जीने देता है।

अपने उपन्यास 'नीलोफर' में वे दिखाती हैं कि आदिवासी युवती नथनी से लेकर अमेरिका की नीलम (नैंसी) तक नारी के अपमान और उत्पीड़न की श्रृंखला एक ही है। इस सत्य को लेखिका ने अपने बृहत्तर परिवेश को देख-भाल कर तो अर्जित किया है, उनके स्वयं के अनुभवों और लम्बे जीवन-संघर्षों का निचोड़ भी यही है।

'निष्कृति' उपन्यास के माध्यम से मीरा व जोधा के चरित्र से समाज में शोषित व पीड़ित नारियों की आवाज उठाने का प्रयास किया गया है। नारी की नियति के विभिन्न पक्षों को न केवल प्रखर अभिव्यक्ति दे सकी है। अपितु नारी के आक्रोश और विद्रोह को अपना मुखर समर्थन भी देती है। इनके उपन्यासों के पुरूष पात्र पति रूप में बेहद कमजोर चारित्रिक स्खलन के शिकार हैं। अपनी दुर्बलता से कुंठित व अपनी पढ़ी-लिखी, सुन्दर पत्नी के प्रति ईर्ष्या व संदेह भाव दिखाई देते हैं। पति की इस प्रवृत्ति से पीड़ित पत्नी पहले तो हताश-निराश व टूटती दिखाई देती है, किन्तु एक सीमा के पश्चात् वह अपनी राह खुद बनाने निकल पड़ती है और स्वावलंबी बनकर स्वाधीन जीवन जीती दिखाई देती है। 'बात एक औरत की' कनु, 'टेसू की टहनियाँ' की सीता, 'मैं अपराधी हूँ' की उम्मी, 'नानी अम्मा मान जाओं' की कनु ये सभी नारियाँ नपुसंक पति द्वारा छली गई हैं।

पति का हीन एवं क्रूर व्यवहार इनके जीवन को नारकीय बना देता है। समाज के भय से तथा बच्चों के सिर पर पिता के संरक्षण के कारण पति के साथ रहना इनकी विवशता बन जाती है। यह चाहकर भी इस दलदल से बाहर निकलने का रास्ता नहीं खोज पाती। 'मैं अपराधी हूँ' उपन्यास में नपुसंक पति द्वारा छली गई उम्मी की पीड़ा को व्यक्त करते हुए स्वयं लेखिका कहती है- "क्या आज बिस्तर पर घटित उसके इस आहत तन व मन की कोई साक्षी समाज को सौंपी जा सकती है ? उसके इस घाव से रिसते रक्त को कोई देख सकता है, एक बन्द कमरे में बीते ऐसे कुलषित नकारे क्षणों का किसे निर्णायक होना चाहिए, भोक्ता या श्रोता को ?"3

कृष्णा अग्निहोत्री ने पाया कि बहुत सी नारियाँ पर पुरूषों की कुदृष्टि और पतियों के अत्याचार को मूक होकर सह लेती हैं। लेकिन बहुत सी नारियों में विद्रोह की चेतना का उन्मेष कथाकार को आश्वस्त करता है। इस विद्रोह के कई रूप उन्होंने अपने उपन्यासों में दिखाए हैं। 'टेसू की टहनियाँ' की सीता स्वाभिमानी प्रवृत्ति की होने से पति द्वारा आचरण पर लगाया गया झूठा आरोप सहन नहीं करती। वह बिना कुछ सुने रात में ही पति का घर छोड़ देती है। वह स्पष्ट कहती है- "मैं झूठ नहीं सह सकती। यदि सह भी लेती तो इस एक झूठ से जीवन भर अनेक झूठों का सिलसिला जारी न रहता क्या ? वे लोग मेरी सहिष्णुता को अपराधी घोषित करते नहीं थकते।"4 कृष्णा अग्निहोत्री ने अपने उपन्यासों में शिक्षा के द्वारा नारी को आत्मनिर्भर बनाया हैं। उसके स्वतंत्र व्यक्तित्व एवं अस्तित्व के निर्माण में सहायता की है। लेकिन इससे भी उनकी स्थिति में बहुत अधिक परिवर्तन नहीं आया है। शिक्षित एवं कामकाजी महिलाओं का शोषण आम बात हो गई है। 'मैं अपराधी हूँ' की विमला, 'बौनी परछाइयाँ' की गुलबदन, 'कुमारिकाएं' की मारिया से उनके उच्चाधिकारी, उनका शारीरिक शोषण ही नहीं करते बल्कि उनका मानसिक शोषण भी लेखिका ने दर्शाया है। 'मैं अपराधी हूँ' की विमला को उसका बॉस डांटते हुए कहता है- "यदि विमला मेरे साथ खुशी से रहो तो तुम्हें धन भी मिलेगा और प्रमोशन भी। यदि मुंह खोलेगी तो तुम्हारे मुंह पर तेजाब फिंकवा दूंगा।"5 'कुमारिकाएं' उपन्यास की मारिया सहकर्मी सुरेश द्वारा बलात्कार की शिकार होकर आत्मघात कर लेती है। उनके उपन्यासों में विवाहिता नारियों की पीड़ा अधिक दिखाई देती है। 'मैं अपराधी हूँ', 'नानी अम्मा मान जाओ', 'टेसू की टहनियाँ', 'कुमारिकाएं', 'बात एक औरत की' उपन्यासों में पति अपने निरंकुश अधिकारों के चलते पत्नी के साथ दुर्व्यवहार और अन्याय करते हैं। पत्नी उनके लिए भोगने की वस्तु व उनकी दासी से अधिक कुछ नहीं है। उनकी इच्छाएं एवं भावनाएं उनके लिए कोई महत्व नहीं रखती। 'बात एक औरत की' कनु अपनी पीड़ा को व्यक्त करते हुए कहती है - "संजय जैसे ही पति होते हैं क्या ? वहशी। जानवर। सुख-दुःख और अपनेपन के दो शब्द तक नहीं पूछते। परिचय-अपरिचय के बीच कोई सेतु नहीं . . . वासना की कमजोर रस्सी।"6

कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों में 'टपरेवाले' की लीला, 'कुमारिकाएं' की रोज, 'निष्कृति' की मीरा ये सभी नारियाँ प्रेमिका के रूप में हमारे सम्मुख उभर कर आयी हैं। प्रेम व आत्मसमर्पण की सजा नारी ने सदा लांछन से चुकाई है, वह चाहे उच्च कुल की हो या निम्न कुल की। 'टपरेवाले' उपन्यास में लीला बसोड़ निम्न जाति की युवती

और पन्ना निम्न मध्यमवर्गीय परिवार का युवक है। पन्ना और लीला का प्रेम लेखिका ने निश्च्छल दिखाया है। उनके रिश्ते में कहीं कपट नहीं दिखाई देता। पन्ना और लीला आजीवन विवाह नहीं करते। लीला पन्ना के बच्चे को जन्म देती है तथा उसकी परवरिश अकेले ही करती है किन्तु वह पन्ना पर कभी विवाह करने का दबाव नहीं डालती। लेखिका ने लीला के माध्यम से समर्पित प्रेमिका का वर्णन किया है। 'निष्कृति' उपन्यास में मीरा के माध्यम से ऐसी प्रेमिका को दर्शाया है जिसने अपना समर्पण गिरधर गोपाल के चरणों में कर दिया। सारे समाज की उपेक्षा मिलने पर भी मीरा अपने प्रेम के प्रति अडिंग खड़ी रही है। विधवा होने पर जब मायके और ससुराल वालों से उपेक्षित व्यवहार एवं निरादर मिलता है तब मीरा लिखती है, "मेरे तो गिरधर गोपल,दूसरा ने कोऊ, माता-पिता-तात-बन्धु, और न कोऊ।"7

उस काल में नारी की स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ने वाली मीरा आज भी अमर है। इसलिए कृष्णा अग्निहोत्री ने मीरा एवं जोधा के चरित्रों के माध्यम से समाज की सारी भ्रांतियों को दूर करने का प्रयास भी किया है।

कृष्णा अग्निहोत्री के नारी सजग एवं जुझारू है जो गरीब है अनपढ़ है। 'मैं अपराधी हूँ' की शांति स्वाभिमानी, परम्परावादी, कर्मठ नारी है। वह निम्न वर्ग की अनपढ़ किन्तु मेहनत से जी चुराने वाली नहीं है। वह अपना काम ईमानदारी एवं मेहनत से करती है। "मेरे हाथ में हुनर, मन में ईमानदारी है सब मालिक क़द्र करते हैं।"8 इनके अनेक नारी पात्र आधुनिक व मार्डन है, 'कुमारिकाएं' की गुड्डी 'मैं अपराधी हूँ' की अंशु, 'नानी अम्मा मान जाओ' की निम्मो इसी प्रकार के चरित्र है। माता-पिता के संरक्षण से वंचित एवं व्यस्तता के कारण समय से पहले उनमें उद्दण्डता एवं हीनता का भाव घर कर जाता है। वे माता-पिता से कटने लगते हैं, तथा अपना रास्ता स्वयं चुनते हैं। वह रास्ता कई बार उनके लिए अहितकारी व अनैतिक होता है। 'कुमारिकाएं' की गुड्डी आधुनिकता की होड़ में इतनी आगे निकल जाती है कि वह चाहकर भी पीछे नहीं लौट पाती। वह अपनी कामाग्नि को शांत करने के लिए अपने ही दोस्तों को खुला आमंत्रण देती है। उसके दोस्त मिलकर उसका जीवन बर्बाद कर देते हैं लेकिन वह आधुनिकता एवं फैशनपरस्ती दुनिया में इतनी लीन हो जाती है कि उसे सही व गलत का अहसास नहीं होता। गुड्डी के चरित्र के माध्यम से लेखिका आधुनिकता पर चोट करते हुए कहती है "जीने के लिए किसी संस्कृति, सभ्यता की उन्हें आवश्यकता नहीं। प्रतिष्ठा लूटने के लिए पैतृक पूंजी ही पर्याप्त है। मुझे तो तरस आता है उनके माता-पिता पर, जिन्होंने 'ब्लैक', स्मलिंग, बेईमानी से रूपये बचाए तो इसलिए कि उनके बच्चे इन बेतुके सुखों के लिए खर्च करें।"9

निष्कर्ष

इस प्रकार उनके उपन्यासों में अधिकतर नारी पात्र केवल अपने आप में सीमित, कुंठित और यातनाग्रस्त नहीं हैं। व्यापक जीवन यथार्थ से उनका रिश्ता बना हुआ है। उनके नारी चित्रण की विशिष्टता है कि जितनी सूक्ष्मता से उन्होंने नारी पात्रों को अभिव्यक्त किया उतनी सहजता से पुरूष पात्रों को नहीं। दूसरी बात उन्होंने पात्रों में कल्पना की जगह यथार्थ एवं जीवतंता की खोज की है। इसलिए उनके नारी पात्र हमें अपने आस-पास ही जीवन से जूझते दिखाई देते हैं, जो प्रेरणा

देते हैं कि जीवन हारने, टूटने व पलायन के लिए नहीं है, वरन् जीवन की सार्थकता प्रतिकूलताओं पर विजय प्राप्त करने में है।

सन्दर्भ

1 'बात एक औरत की,' कृष्णा अग्निहोत्री, पृ.सं.-35, पूनम पुस्तक भवन, दिल्ली, सं2013

2 'टपरेवाले,' कृष्णा अग्निहोत्री, पृ.सं.-37 पराग प्रकाशन, दिल्ली, सं 1976

3 'मैं अपराधी हूँ, कृष्णा अग्निहोत्री, पृ.सं.40, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, सं.2001

4 'टेसू की टहनियाँ, कृष्णा अग्निहोत्री, पृ.सं. 120, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर एवं दिल्ली, सं.-2014

5 'मैं अपराधी हूँ, कृष्णा अग्निहोत्री, पृ.सं. 250

6 'बात एक औरत की, कृष्णा अग्निहोत्री, पृ.सं. 37-38

7 'निष्कृति, कृष्णा अग्निहोत्री, पृ.सं. 75, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, सं 1987

8 'मैं अपराधी हूँ, कृष्णा अग्निहोत्री, पृ.सं. 204

9 'कुमारिकाएं, कृष्णा अग्निहोत्री, पृ. सं. 127, कल्याणी शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली, सं.-2010